शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत की 'फर्स्ट डांसिंग गर्ल' संगीतज्ञ गौहर जान

कोमल सोनी (शोधार्थी)
कोटा विश्वविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

जिस हिन्दुस्तानी सभ्यता की धार्मिक¬.सांस्कृतिक परम्परा में कला के आदर्श रूप में एक स्त्री की छवि को प्रतिष्ठित किया गया, वहाँ की स्त्रियों की कला.चेतना ने विभिन्न कला रूपों को समृद्ध करने में निश्चित रूप से बहुत बड़ा योगदान दिया है। लेकिन सरस्वती.पूजक पुरुष सत्तात्मक समाज की यह एक बहुत बड़ी विडम्बना है कि जब हम भारतीय कला.साहित्य और संस्कृति के इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो पुरुषों की तुलना में स्त्रियों का नामोल्लेख बहुत कम पाते हैं। यद्यपि पुरुष-प्रधान समाज होने के बावजूद कुछ महिला कलाकारों ने अपनी उल्लेखनीय रचनात्मक योग्यता के आधार पर एक अलग ही पहचान बनाई है और विभिन्न कलाओं के क्षेत्र में अपने परिवर्तनकारी योगदान द्वारा भारतीय कलाओं को प्रकाशित, प्रभावित और संवर्द्धित किया है। उन्नीसवीं शताब्दी की ऐसी ही एक महान महिला गौहर जान का नाम संगीत क्षेत्र की अधिष्ठात्री के रूप में जाना जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में गौहर जान के संगीत में योगदान को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तावना

इतिहास-प्रसिद्ध महान गायिका गौहर जान का जन्म 26 जून 1873 ई. को आज़मगढ़, उत्तरप्रदेश के ग्राम पटना में हुआ। गौहर जान ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की शुद्धत को न सिर्फ़ बरक़रार रखा, अपितु उसमें इज़ाफ़ा भी किया। संगीतज्ञ गौहर जान को इतिहास में 'फर्स्ट डांसिंग गर्ल' के नाम से भी जाना जाता है। ग्रामोफ़ोन रिकार्ड्स के माध्यम से हिंदुस्तान की 'पहली महिला पार्श्व गायिका' होने का श्रेय भी गौहर जान को हासिल है।

गौहर जान जैसे-जैसे संगीत के क्षेत्र में महारथ हासिल करती चली गयीं वैसे-वैसे उनकी प्रसिद्धि दिनों-दिन बढ़ती चली गई। कलकत्ता से बाहर उत्तर भारत के बाद दक्षिण भारत तक भी संगीत व नृत्य के क्षेत्र में गौहर जान के नाम की धूम मच गई। मैसूर राज-दरबार में गौहर जान के गायन और नृत्य ने वो रंग दिखलाया कि वहाँ के राजा चमराजेन्द्र वडियार (1863-1864) के प्रमुख संगीतज्ञों में उन का नाम गिना जाने लगा। इस सम्बन्ध में निम्नांकित गद्यांश इस तथ्य की पुष्टि करता है :

"संगीतज्ञ 'गौहर जान की प्रसिद्धि अब कलकत्ता की चहारदीवारी से निकल कर उत्तर से लेकर दक्षिण भारत तक प्रसारित हो रही थी। मैसूर के राजा 'चमराजेन्द्र वडियार' (1863-1864) ने जब भारतीय संगीत जगत की उभरती नई सितारा गौहर जान को एक महफ़िल में सुना तो गौहर जान की गायकी से इतने प्रभावित हुए कि अविलम्ब अपने राज-दरबार में प्रस्तुति के लिए आमन्त्रित कर लिया जो कि मैसूर राज्य के दक्षिण हिस्से में पड़ता था। संगीतज्ञ गौहर जान ने दरभंगा राज्य की तरह मैसूर में भी अपनी गायकी का रस एवं नृत्य का रंग महफ़िल में इस

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तरह घोला कि समस्त श्रोतागण मन्त्र-मुग्ध हो गए और उनका नाम वहाँ पर आने वाले उन संगीतज्ञों की फेहरिस्त में शामिल हो गया जो अक्सर महाराजा के उत्सवों में शिरकत किया करते थे।"1

संगीतज्ञ गौहर जान

संगीतज्ञ गौहर जान बहुत ही उम्दा तथा अपनी विशेष पहचान रखने वाली उच्चकोटि की गायिका थीं। वे उस समय प्रकाश में आईं जब संगीत का इतिहास बहुत महत्वपूर्ण मोड़ पर था। उस समय ग्रामोफ़ोन रिकार्ड का आविष्कार हुआ था और रिकार्डिंग विज्ञान प्रकाश में आया था। ग्रामोफ़ोन तकनीक का आविष्कार गौहर जान की लोकप्रियता में गुणात्मक वृद्धि होने के महत्वपूर्ण कारक के रूप में सामने आया। निम्नांकित गद्यांश इस सम्बन्ध में स्पष्ट प्रकाश डालता है :

"सन् 1877 में थामस एल्वा एडिसन द्वारा 'फोनाटोग्राफ़' नामक यन्त्र का आविष्कार किया गया, जिसका परिष्कृत रूप 'ग्रामोफ़ोन' था। सन् 1902 में लन्दन से फ्रेड जायसबर्ग (Fred Gaisberg) ग्रामोफ़ोन रिकार्ड के लिए दिलकश आवाज़ की तलाश में भारत आया तो गौहर जान की गायकी से अत्यन्त प्रभावित हुआ और गौहर जान के समक्ष उन की आवाज़ को ग्रामोफ़ोन यन्त्र द्वारा रिकार्ड करने का प्रस्ताव पेश किया। संगीतज्ञ गौहर जान ने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया और इस प्रकार गौहर जान का नाम भारत की पहली ग्रामोफोन पार्श्व गायिका के रूप में दर्ज किया गया।"2

संगीतज्ञ गौहर जान की गायकी का रसिकजनों पर ऐसा नशा छाया कि उस के बग़ैर महफ़िलें बेरौनक़ समझी जाती थीं। आगे चलकर "गौहर के बिना महफ़िल, जैसे शौहर के बिना दुल्हन" इस जुमले ने लोगों के बीच कहावत का रूप ले लिया। यह कहावत संगीतज्ञा गौहर जान की तत्कालीन लोकप्रियता का अनुपम प्रमाण है।

ग्रामोफ़ोन रिकार्ड्स के माध्यम से गौहर जान को न केवल देश बल्कि देश की सीमाओं से बाहर विदेश में भी लोकप्रियता हासिल होने लगी। निम्नांकित गद्यांश ग़ौरतलब है, "संगीतज्ञ गौहर जान की आवाज़ में रिकार्ड किए गए ग्रामोफ़ोन डिस्क ने देश-विदेश में बेहद ख्याति अर्जित की। यह एक प्रामाणिक तथ्य है कि गौहर जान के ग्रामोफ़ोन रिकार्ड डिस्क सन् 1940 तक सर्वाधिक बिकने वाले रिकार्ड डिस्क में से एक थे। संगीतज्ञ गौहर जान संगीत-सितारा बन चुकी थीं, उन के छाया-चित्र ऑस्ट्रेलिया में बनने वाली माचिस की डिब्बियों पर छपने लगे थे। गौहर जान के चित्र मण्डित पोस्टकार्ड उस ज़माने में दो आना प्रति के मूल्य से बिका करते थे। यह तथ्य भी गौहर जान की लोकप्रियता को प्रमाणित करने वाला उत्कृष्ट उदाहरण है।"3

संगीतज्ञ गौहर जान की इस प्रसिद्धि के सन्दर्भ में लेखक विक्रम सम्पत के निम्नांकित विचार उल्लेखनीय हैं, "Thus at a time when media and publicity were absent and unknown to performing artist, Gauhar jaan reigned over the world of indian music like an empress and won the hearts of millions."4

ग्रामोफ़ोन रिकार्ड्स के माध्यम से गौहर जान की लोकप्रियता अपने चरम तक पहुँच गई। आलम यह था कि गौहर की दिलकश आवाज़ में 10 से अधिक भाषाओं में 600 से अधिक नग़्मों के ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड बाज़ार में आ गए और यह महान गायिका 'रिकार्डिंग स्टार' के ख़िताब के साथ प्रसिद्धि के आसमान पर पहुँच गई।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गौहर जान को यह श्रेय भी हासिल है कि ग्रामोफ़ोन रिकार्डिंग तकनीक के तक़ाज़े के मुताबिक़ भारतीय शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं की रचनाओं के गायन के लिए 'तीन मिनिट' की समय सीमा में सम्पूर्ण किए जाने का फ़ार्मेट (Format) प्रथमतः गौहर जान ने तैयार किया। हालाँकि यह समय सीमा ग्रामोफ़ोन तकनीक से तैयार की जाने वाली रिकॉर्ड-डिस्क की सामर्थ्य की सीमा थी और उस ज़माने में सिर्फ़ तीन मिनिटों के अल्प समय में शास्त्रीय संगीत की किसी विशिष्ट विधा, किसी विशिष्ट राग, थाट और तालों के सभी रंगो को पेश किए जाने के लिए नाकाफ़ी जाना जाता था, इस के बावजूद गौहर जान ने अपने संगीत कम्पोज़ीशन के हुनर का वो कमाल दिखलाया कि गौहर जान द्वारा ईजादशुदा तीन मिनिट वाला फ़ार्मेट, संगीत कम्पोज़िंग के लिए पैमाना (Standard) बन गया और बाद के कई दशकों तक, जब तक कि संगीत रसिकों की पिपासा को सन्तुष्ट करने के माध्यम के रूप में एल.पी. रिकार्डिंग का प्रचलन रहा, यह पैमाना सर्वमान्य बना रहा। निम्नांकित गद्यांश उपरोक्त तथ्य की पुष्टि करता है, प्रस्तुत है, "It should be noted that she is often given credit for developing the three minute format for classical performances. This was the time limit imposed by the recording technology of the day. This format remained the standard until the advent of lp recordings many decades later."5

संगीतज्ञ गौहर जान बहुमुखी प्रतिभावान शख़्सीयत थीं, न केवल गायन एवं नृत्य कलाओं में निपुण थीं, बल्कि कविता-लेखन (शाइरी) कला पर भी ज़बरदस्त पकड़ रखती थीं। गौहर जान ने शाइरी के मैदान में भी 'हमदम' तथा 'गौहर प्यारी' उपनामों के साथ सृजनरत रहीं, हिन्दोस्तानी, उर्दू ज़ुबान में ग़ज़लें, नज़्में कहा करती थीं। आज के ज़माने में जहाँ एक व्यक्ति के लिए दो या तीन भाषाओं का ज्ञान होना भी बड़ी बात है, वहीं 'गौहर जान' का 20 भाषाओं पर आधिपत्य था, जो कोई मामूली बात नहीं है,यह तथ्य 'गौहर' के असाधारण व्यक्तित्व का परिचायक है।

संगीतज्ञ गौहर जान भारतीय शास्त्रीय संगीत के आकाश का वो बुलन्द एवं दमकता सितारा रही हैं, जिसे हर कोई देखना व सुनना चाहता था। गौहर जान अपने ज़माने में महिला संगीतज्ञों की आगामी पंक्ति के लिए एक प्रेरणा-स्रोत की हैसीयत रखती थीं। गौहर जान के संगीत से प्रभावित होने वाली महिला संगीतज्ञों में प्रसिद्ध गज़ल गायिका बेगम अख़्तर तथा प्रख्यात ठुमरी गायिका सिद्धेश्वरी के नाम भी शामिल हैं। इस सन्दर्भ में इण्टरनेट पर उपलब्ध निम्नांकित गद्यांश महत्वपूर्ण हैं, "ऐसा कहा जाता है कि 'बेगम अख़्तर' फ़िल्मों में अभिनय करना चाहती थीं, लेकिन जब उन्होंने गौहर जान को सुना तो अपना सारा ध्यान संगीत सीखने पर केन्द्रित कर दिया था। बेगम अख़्तर के प्रथम गुरू उस्ताद इम्दाद ख़ान संगीतज्ञ गौहर जान के सारंगी वादक थे।"6

प्रसिद्ध ठुमरी गायिका सिद्धेश्वरी देवी अपने बाल्यकाल से गौहर जान की गायकी से प्रभावित रही। उन (सिद्धेश्वरी देवी) की दिली ख़्वाहिश थी कि बड़ी हो कर वो भी गौहर जान की तरह संगीत की दुनिया में अपना नाम कमाऐं।"7

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि संगीतज्ञ गौहर जान ने अपने जीवन काल में लोकप्रियता की निरन्तर सीढ़ियाँ तय करते हुए अद्वितीय लोकप्रियता हासिल की, विभिन्न शाही दरबारों की दरबारी संगीतज्ञ होने का श्रेय भी गौहर जान को

E ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2016

हासिल था तथा राष्ट्रीय स्तर पर भी ब्रिटिश सरकार द्वारा सम्मानित हुई। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि संगीतज्ञ गौहर जान ने अपने जीवन ही में हर ख़ासो-आम के दिलों में अपना मख़्सूस मुक़ाम बना लिया था और इस तरह वह लोकप्रियता के शिखर को प्राप्त कर चुकी थी। इस क्रम में 'गौहर जान' ने अपने जीवन में तत्कालीन भारत की विभिन्न रियासतों में प्रवास किया। उन की संगीत यात्रा आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश से प्रारम्भ हो कर, दरभंगा और रामपुर की 'दरबारी गायिका' के रूप में ख़िदमत अन्जाम देने और कुछ समय के लिए बम्बई में पड़ाव लेने के उपरान्त मैसूर राज्य की दरबारी संगीतज्ञा के रूप में तमाम हुई।

संगीतज्ञ गौहर जान का अन्तिम समय मैसूर में बीता, जहाँ 'गौहर जान' को दरबारी गायिका के रूप में नियुक्ति मिली थी। इस दरबार में केवल 18 महीने की अल्प अवधि तक ही अपनी गायकी के जौहर दिखा सकीं।

'द रिकार्ड न्यूज़' के अनुसार, "सन् 1928 में संगीतज्ञ गौहर जान को मैसूर राज की 'दरबारी संगीतज्ञा' के रूप में नियुक्त किया गया, जहाँ उन्होंने अपने जीवन की अन्तिम सासें ली। 17 जनवरी, 1930 को इस संसार को हमेशा के लिए अलविदाअ कह कर रुख़्सत हो गईं।"8

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 माई नेम इज़ गौहर जान, विक्रम सम्पत, पृ. 63

2 Degree Coffee by the Yard: A Short Biography of Madras, Nirmala Lakshman, pg119

3 Women of India: Colonial and Post-colonial Periods, Edited by Bharati Ray, pg. 46

4 My name is gauhar jaan, Vikram Sampath, pg 117

5 http://www.chandrakantha.com/biodata/gauhar_jan.html

6 http://www.womenonrecord.com/

7 www.frontline.in

8 The Record News, The journal of the 'Society of Indian Record Collectors', Mumbai